

द्वयंरत्न ब्रह्माचार्य गुरु श्री महाबिहार

PM 286

प्रवक्ष्या

दत्ती पूजा

ॐ नमो वक्ष्याय नमो धर्माय नमो शरीराय ॥ प्रवक्ष्याग्रह नमश्च ॥ वन्दे कृत्य विधिना कृत्य कृत्य दक्षिणया
या ॥ अथ यगुचमस्तुल्य पंचगव्याधनं सिंधुतय ॥ प्रिसमाधि कलभाधिवसन ॥ देवपूजा ॥ यनव
दकृत्य यनिलसास्य हय ॥ स्वसिक्तसस्वन ॥ गुचमस्तुलदनक ॥ मिषाधिवसन ॥ निवाऊनं लाहा
गिरवका ॥ यक्षगव्याहाय ॥ कलभाधिवकविय ॥ स्वसिक्तावन र्थकाठिन लज्जगुलि आगनस
सद्याचक ॥ थलपाइसीमस्तुल्य थलकसकलस्यन स्वानकन आमिषाविय स ग्वनकय दक्षिण

१

ग्रहन

पूजा धलमूपानिर्सीदकस्त क उवियक ॥ आशीर्वादा विसर्जन धूमिदूराचक्रिया ॥ ॥ थहाशना
अ आगमस लयमिवाजीलन दयक पूजा दगुलिसमय आकृत्यथनिरुला ॥ ॥ थनलद्विवादि
हुव रिडगुदितस ग्वलदानकय दवस्व ग्वलपान १ ग्वचग्व १० दीधुनकय ॥ पूजापत्रपचावा
दि धनलि अचिनिकाया ॥ ॥ थनलि वेदकृत्य यक्षदुशानिर्सीधर्मदनक ॥ ॥ वन्दे कृत्य कृत्य दयक
वीमल नूचिगा कृत्य काथयालकम कृष्णच दिदिवाकथि सिजल गुचपाव थाल उ मस सलचडि ॥

प्रवक्षा

कथयाद३

वि

धर्मदत्तयाग पूजार्हसिद्धि। चनिवचरु ३ श्रुतपाचाग ४ पिवसमूहयाग ॥ ॥ धूमिदयक रुला ॥ ० ॥
उं नमः श्रीवज्रसत्ताया ॥ रुपां चेत्यरुचा ३ प्रहापाचमिका लोकध्वज पिवसमूह केलस सलग्नन कृष्ण
नमिजलगुनपाठु शिवरिववीफा सीमल थावजुसचदुस र्यशायी यरु नागया दधवलि धूमिथा
यलपा ॥ आदी सूर्यार्थ गुचमभुल पञ्चगव्य भाधन सिद्धमये । लेखवलिष्ठये मुसमाधिः कलभाधि
वासन पिवसमूह यातं यरु थापना अग्नेरुमि देवपूजा देवगाहनि धनलिवाकपूजा ॥ ॥ धनवदे

२

ग्रहन

का२

कथयानितस्वस्य हयस्वसिकससान गुचमभुलदनक चेत्यरुचा ३ कलानगनक । पूचरुनकयक हा
थजाजलपकनया ॥ खेकने ॥ ०० दानी प्रवक्षा ग्रहनमचन गडकी विनयी ॥ आर्वखमाकन ॥ ॥ वन्दे
कथया प्रवक्षा ग्रहनया खेकनय रुपां विनयवचनैलाया ॥ ॥ आचार्यायाध्याय प्रवर्जयिकवी ३
पसंयादयिकवी ॥ ॥ धन आचार्य उपाध्याहर्न आह्लादयकल रिद्रुअनां लाचक धर्क ॥ ॥ रिद्रुवा
जाननिकथे प्रवर्जयिकवी कथमूपसंयादयिकवी ॥ ॥ दमिष्यपनि रिद्रुइयमसिलडाव गथरि

हसिष्य रुपनि ६२

इशयधकधालसा, रिद्रुपनिसव, नायलाचकधर्क गुचुउयाध्वाहानकडा॥ ॥रुगवानाहाष्टीरुगवाने
 ज्ञाग्यादयकले॥ ॥यस्यकस्यचिन्प्रवक्ष्याथ यउपसीकामनी सकनामीश्वरवायिकधर्मपृष्टु॥ ॥अ
 माचैत्यरुचाठ प्रह्लापाजमितालाकध्वरधुपनिवृद्धधर्मसंघ, धर्मिसद्वन॥ ॥आदोष्टिसचक्षिगमना
 निपंचविदापदान्यपासकसम्बदान्वी॥ ह्यापिवृद्धधर्मसंघयाक सचनवन, पंचभिन्नापदविद्वन,
 उपासकधर्मविद्वनजिपनिसु॥ ॥सेत्यवन्दनीकाचयित्वा, नारायणपूजनामलुलकाचयित्वा, उ

कूटकासनकृता ऊर्लिपगृध्र, प्रवेवकवी॥ ॥सेत्यनमस्करयाडा, नारायणयाकवन, मलुलदयकाव
 पूचचूदनवाडाव, हाथकाऊलपयाडाव, गुचुयाकनमस्करयाडाजिपनीसनथ, स्वध्याया॥ ॥ब्रहि॥
 अहमिर्थनामा, यावकीर्ववृद्धसचक्षिगच्छमि, द्विपदानामयी॥ ॥जिमिसधअरनामकिथनाव, ग्परा
 गाधालसाजिपनीसजीवनवहयागाल, वृद्धयाकसचनवन॥ ॥देवयीमनूषयी, अष्टरुयावसाडथधिम्न
 वृद्धसचक्षिवन॥ ॥धर्मगवर्क्षगच्छमि, विवागभनामयी॥ ॥धर्मयाकसचनवन, धर्मेश्वरिगधि

प्रवक्ष्यामि

क

प्रध्वलसा, जागद्वय, कामक्रोध, मायाभारु, गालनावविष्कार, समस्त पापमदुःखार्थिन्, मरुत्तरीप्रहारा
वमिगास्त, सवनवन ॥ ॥ संध्यावर्तगच्छामि गहमनामयी ॥ ॥ संध्याकसवनवन, संध्यायुगविधि
प्रध्वलसा, गहयामध्याह्न्ये प्रवर्तयार्थिन्, आर्यावलोकित, धनार्थिन्, लोकवस्तु, जिघृक्षुनी सवनव
न ॥ ॥ धनपञ्चमिख्यास्वकन ॥ ॥ अहमित्थनामायावद्भीर्वी, प्राप्तिदियार्थं, प्रमि विचमामि ॥ ॥ जिमिस
थवरनामद्विधवाव, गालना, जीवनवहचपगाल, कवयावद्वपुःपानिस्थन, प्राप्तिपनी, स्याथमनवध

४

ग्रहन

कंसस्याक, वसमश्व, आवद्धपनीसन, वसश्वमनवा ॥ १ ॥ अहमित्थनामायावद्भीर्वी, नृदहयानी, प्र
मि विचमामि ॥ ॥ जिमिस, थवरनामद्विधवाव, गालना, जीवनवहचपगाल, मवयावस्तु, द्वयथ
कलपाव, हयकावकार्य ॥ ॥ वसश्वमनवा, वद्धपनीसन, कवयापनीसन, वसमश्व ॥ २ ॥ अहमित्थः
नामायावद्भीर्वी, काममिथ्याचारं, प्रमि विचमामि ॥ ॥ जिमिस, थवरनामद्विधवाव, गालना, ध्वलसा ॥
जीवनवहचपगाल, मवयास्त्रीयाक, सीवलपावश्य, वायव्य, वसश्वमनवा, वद्धपनीसन, कवया

पवक

रु

पनीसनमयाक ॥ ३ ॥ अहमिह नामा यावकीर्व मृषावादी प्रणिविचमामि ॥ ॥ जिपनिसधव २ नामदि
थडाव ग्वलनाधलसा जीवनवहलपनाल रुसर्षकाय असत्यर्वकाय ऋषवाषकाय असहयम
नवद्वपनिसननालमिन ॥ ४ ॥ अहमिह नामा यावकीर्व सनामेवय मयप्रमादसुनै प्रणिविचमा
मि ॥ ॥ जिमिसधव २ नामदि थडाव ग्वलना जिअनवहपनाल कायप्रअवसु लूपगजिवमीआ
दिधकायकावइयलसइयमनवद्वमिसननिअयनैनालमिन ॥ ५ ॥ एवेविधवर्गमनैयध

३

ग्रहन

मिहपदमीधवयिगु ॥ हनाथहगुवा निअयनैवद्वधर्मसंघधसा अर्किसवनअनइला थडागा
मिहपदजिपनिसनधवलपइला ॥ ॥ धनआचार्ययाके याचनायाचक ॥ ॥ समन्वाहर्च अहमि
हनामी आचार्य याचक आचार्यलोहप्रवर्किकवी ॥ ॥ एकमनएकचिरुयाडाव जिमिसधव २ ना
मदि थडाव गुबूकयाचनायाडा हगुवा हनाथद्वलपालपनीसन जिपनीरिद्वइयप्रसन्नइसन ॥
हर्चउपाध्याहायाके पार्थितायाया ॥ ॥ समन्वाहर्च उपाध्यायरुगवान् उपाध्यायरुत्वा अहमि

प्रवक्षा

५

हृन्नामी उपाध्यायनाहं प्रवक्ष्यामि ॥ ॥ एकमन एकचिह्नयाहाव उपाध्यायस्ते कृतपालजिमिस
सासाधकं कृतपाल उपाध्यायस्ते प्रार्थनायाहा जियनिसन जिमिसथवरनामोद्धृतावह उपाध्याय
कृतपालमन जियनिरिद्धं स्य प्रसन्न इयमाला ॥ ॥ निचयि ॥ ॥ मधुलतविसर्जनास्नानकृतलक्ष्म
चक। लावता निवाञ्जनं वज्रगात्रा मरुदं गाय मेखलावंध अइवाचस ग्वचग्व २ मस्य कथमावियं।
साधुलीमित्रासकाठचिकं मस्य गाय नवूकचमि हाथपूजा कृतलक्ष्म ॥ गालवाजानकं थफालिन

लर

३

ग्रहन

कीनिर्नीलाहासालावचन साधुय सासकलक काठचिकनीवयक माठल्लयक आगनसीमस्य सीखा
चकं लसिधनक अचलहासलनी माठल्लयक लसिपाचक अलनन खालसीचक लाहासालीहय
कथवरथमसनीनयापक्षगवाविय ॥ ॥ धनगुवनधाय ॥ अयापित्वं गृहीनी समानमव किंप्रवक्ष्यामी
निधयमि ॥ ॥ आवयाअयापि जावत्तनी निधयनी कृपनी गृहीवउध कुनी कृपयाऊनी रिद्धं कृय
निधयनी प्रवला ॥ ॥ यदिववीतिनिधयनी ॥ ह गुवाहनाथ जियनी रिद्धं कृय निधयनी यवधक मिषोन

प्रवक्ष्यामि

ॐ सर्वावर्षीविश्वधनं सर्वज्ञानवा जानूदय २ ॐ स्वाहा ॥

५३

धायक ॥ ॥ धनभागनसंलिङ्गुवलासलाचर्कं वसंधनकं थलपानं लक्ष्मीचान् आगसीधनकं स्वस्तिवा
कपदय ॥ ॥ धनधनयात्रादिं डाक्षस्य ऊवया लकचोत्थयाव करवायेगमनं द्याव लेषाचान् आगन
संखाय थलरुससंरुयकं । शुभ्रनाउरु मकटनपूर्य्य एकसविषदन् डायाव कलधलीखर्ग
खसकयाव धीखलीखर्ग पिवसमदन् डाक्षस्य नीलखनलया ॥ अइवाचकयनामाय थवश्वा
संतय दिगमायाव कसायपनासीविया ॥ ॥ धनखर्वकडा ॥ वृहि ॥ अहमित्तेनामीयावङ्गीर्व
थलपानं

५

गहन

गृहीलीगपचिराजमिप्रवक्ष्यामीगसमादद ॥ ॥ किमिस्थवश्नामद्विधवाव ग्यलोनाधालसाजी
वनवहलपनाले गृहकयामचक्राकठाठन लिङ्गयामचक्राकठाठन विदूने किमिस्म ॥ ॥ कनः प्रव
क्ष्याचिरुसामूखीतावैकृत्वा प्रवाजय ॥ लिङ्गद्वये एकमन एकचिरुशला एकाकाचया डावलिङ्ग
कृ ॥ गृहसूनामपचिरागननिकायनूयने लिङ्गनामात्राचलएवैक ॥ गृहसूनामकाठनाव
लिङ्गयानामकर्तुं कृत्वा विष्ठाकृते ॥ लचिकनेनिचक ॥ लिङ्गयानामकृत्वा हंशी आनदधालिपूय

प्रवक्षा

उ

मोज्जल्यायहि काव्यधर्मग्री, धीमिग्री, धीलसागव, विनधी नाम, वीरनागर, उवस्व॥ ॥ धनव
रु, धर्मसंघ, मलुल, अष्टदलयद्र, सागुलि, यस्मानवायक॥ वरुमलुलसा॥ उवुवमलुलसर्वविद्या
नरुचयहं॥ स्वानेमलुलसदीयकावचनवलसवाय॥ धनस्वानवा॥ उआयवेवाचनायवजपूर्य
प्रनिष्ठुवाहा॥ दधुसा॥ उआयदिहायवज॥ हुवना॥ उआयचत्तसेरुवायवज॥ खवसा॥ उआय
मिनागायवज॥ धवने॥ उआयमाघसिद्धयवज॥ ऊवसा॥ उआयलोचनायवज॥ खवकांनस॥ उ

ठ

ग्रहन

आयमासकेवज॥ खवधधूकानस॥ उआयपाधुनायेवज॥ ऊवधधूकानस॥ उआयनाचायेवज॥
ऊवकाधूकानस॥ पक्षपचाजपूजा॥ सुमि॥ ॥ रुष्टुकिरुससद्विकल्पमिचमं, प्रवधर्वचरुलीकामका
धविषयिदकदधर्न, नारुप्रचलुदक्ष॥ माहास्यलगावीचकोटवधायी, चिकोवगलुनूरीप्रहामनुव
लनय४समिगवांवूद्यायनसेनम॥ १॥ धर्ममलुलसा॥ उधर्ममलुलसर्वविद्यानरुचयहं॥ स्वा
नरुयकाववाया॥ उआयप्रहापाचमिनायेवजपूर्यप्रनिष्ठुवाहा॥ दधुसा॥ उआयगन्धवृहायवज॥

उवका

ॐ

॥ कृतवना ॥ ॐ आर्यदधरु मिकार्येवज ॥ खवसा ॥ ॐ आर्यसमाधिवाजायवज ॥ धवन ॥ ॐ आर्यलीकाव
नावायवज ॥ उवसा ॥ ॐ आर्यसद्धर्मपूषुवीकायवज ॥ खवकाथूकानसा ॥ ॐ आर्यतथागतगुह्ययवज ॥
खवथथूकानसा ॥ ॐ आर्यललितविस्त्रवायवज ॥ उवथथूकानसा ॥ ॐ आर्यसर्वपुत्रायवज ॥ उव
काथूकानसा ॥ पक्षपवाचपूजा ॥ सुमि ॥ ॥ याजुदिकदुःखनफमहसा वदुपवप्रालिनी यशुधनु
कपडिनादहचहः सत्वीसमाकर्षिता ॥ अज्ञानभङ्गगत्समस्तवमियः ॥ संहृष्टादुःखार्थुवान्नीवद्वार

सा २

ग्रहन

पूठशुनायमहर्धर्मायतस्मेनमः ॥ २ ॥ संधमलुलसा ॥ ॐ संधमलुलसर्वविघ्नान्त्वाचयह ॥ स्तान
मलुलदूयकाववाया ॥ ॐ आर्यवलाकिर्धवायवज ॥ पूर्वाप्रतिष्ठाहा ॥ दधुसा ॥ ॐ आर्यमंजीयवज
॥ कृतवना ॥ ॐ आर्यगगनगीकायवज ॥ खवसा ॥ ॐ आर्यसमकरुद्रायवज ॥ धवन ॥ ॐ आर्यवजपाहा
यवज ॥ उवसा ॥ ॐ आर्यसज्जुधायायवज ॥ खवकाथूकानसा ॥ ॐ आर्यसर्वनिवर्धविस्त्रुतिनयवज
॥ खवथथूकानसा ॥ ॐ आर्यद्विनिगर्तायवज ॥ उवथथूकानसा ॥ ॐ आर्यखगर्तायवज ॥ उवकाथूका

अवस्था

७१०

नसा॥पंचायनपूजास्तुति॥ ॥चत्वारंशप्रतिपदेनकारुवसुखसुखादविद्वेषिताःचत्वारंशरुलेष्टि
नासमजनासाकामहायागिनी॥००॥त्यष्टौवर्षपूंगलागवतायस्मिन्गलावाहनाप्रहोषी
लसमाधिर्नपेवपूषसंघायनस्मेनमशा॥३॥विषयवर्षावका॥॥खेकने॥॥ब्रहि॥श्रुमिर्दना
मांयावक्कीर्ववृक्षवर्षगच्छमि॥द्विपदानामग्री॥जिपनीसथव२नामक्षिधडावग्यलनाधालसा॥
जिमिसजिवनवहलपनालेहनीवृक्षयाकेजिपनीसवनअन॥वृक्षरूपगधिनाधालसासमस्त

१०

अहन

दवयावृक्षादियदयाउरुमधर्म,धर्धिअवृक्षसि सवनअन॥१॥धर्ममवर्षगच्छमि॥विवागमल
मग्री॥हन्तीजिपनिधर्मसंघवनअन,धर्मरूपगधिधालसा,नागध्व,कामवृद्ध,माया,माह॥
लाहमइ,धधिअधर्मप्रह्लापानमितासि सवनअनजिपनी॥२॥संघमवर्षगच्छमिगलनाम
गु,हन्तीसंघयाकेमवनअन,संघरूपगधिअधालसा,गलदक्या,शृष्टी,उरुम,गलयासध्वस,शृ
ष्टरुयावविष्ठाक,धर्धिअसंघलाकेधवनसवनअनजिपनि॥३॥धनदमभिषापदविया॥गुन

ध्याया॥ सर्वकृता॥ ॥ समन्वाहर्चयथानं आर्याहर्कनायावक्कीर्वे प्रासादिपार्तप्रहाय प्रासादियानाकप्रतिवि
वता॥ गुचसंध्या॥ हृषिचक्रपनीमनप्रकमनप्रकचिरुयाईईडा गथधालसा अहर्कवृद्धपेनीस्य
लास्यनया ग्यलनधालसा जीवनवहलपमालं प्रासिजनपनीस्यायसचसयायमनं जीवनवहलपाव
वाइ कीलपटजं हृषादिं स्यायं वसमरुवृद्धपनीस्यनेमाउनिन॥ मिषाधायक॥ अवमहमित्तेनामा
अवक्कीर्वे प्रासादिपार्तवेवमर्षा आमलचक्र मिषापदसमादद॥ ॥ हृगुवाहनाथ निश्चयनें जियनी

सनथवरनामक्षिपडाव जीवनवहलपमालं कीलपटजं हृषादिं प्रासिजनस्यार्थमयलो आवनलीः
आर्तधामलचक्र मिषापदकूलपोलसनप्रसन्नरुस्यविस्मविष्कद्रुन॥ ॥ अवमवाहं प्रथमनीगन
नधामायाहर्कनाम मिद्रीं नूनिद्रीं नूनिविधिं नूनिचामि निश्चयनें जियनी सत्यं भूगुलिमनीचल
अहर्कवृद्धध्यायकनथागर्क मिद्रीपनी क्षिप्यसन क्षिप्यविधियाय क्षिप्यधनलयरुलो॥ ॥ यथानं
आर्याहर्कनायावक्कीर्वे अदलादानं अवक्कचर्यं मृषावायं सूचामेनयं मयप्रमादहने॥ हृमिषाजि

प्रवक्ष्यामि

ॐ
स्वि

नक्षत्राणां च वया अहं नृपनिष्ठान् जीवनवहलपमालं मवया दुव्यलोरु मया क श्रुता वाचिमश
व अमर्त्यं कृष्णवायुं क्लायं मय उ लपुगतिव मान धृष्टादिं कायकावमश्व कायजया वस्तु कं म
नव ॥ ॥ नृप गीतवादिन माला गंधविलपनी वस्तु क रूषलधा वल मृच्चमयन महाभयन अका
लराजनं ज्ञानपुत्रजन प्रमिया हय प्रमिविचनो ॥ हर्चं प्याखन हय माला वाजन थाय ध्वंस
मश्व त्वाकलान कृय पञ्चगन्ध आदि न स्वाकन मसलपनयाय ध्वंस मश्व नाना वस्तु गुलि

१२

ग्रहन

वस्तु पातप्रनं वचन मतिव ह्यं दाल रवागा पली कि आदिन गाजाव आसन स मश ॥ हर्चं निराल वि
नका वं मनव ल उ हा या वस्तु कनी मतिव धनी स कृवया वृक्षपनी स्थान मया क थधि ६ सचम मश
व आवनली कृपनि सन गाउ नि हन ॥ मिथ्ये धायक ॥ ॥ जवम ह मितु नामा याव क्री वं अदल
दानं वेचम ह्यं अमल वक मि द्वा पदं समादद ॥ हनाथ ह गु ना निधयनी कि मि स थ व २ नाम कि थ
हाव जीवन वहलपमालं मवया वस्तु क दुव्यलोरु याय मव्यय कं मकाला जिपनी सन निधयनं

प्रवक्ष्यामि

ॐ
ह

वसमश्लो. श्रीमहादेवकमिदं पदं विष्णुन हं गुच्छं जिघृक्षुः ॥ ॥ अहमिह नामायाव जीव जीव
वर्षं मृषावाचीं सन्नामेव यमय प्रमादस्य नै ॥ नृत्तं गीतं वाद्यं सत्ता गीध विलयनं वल्लुक्क वसंध
वली वेवमली श्रीमहादेवकमिदं पदं समादद ॥ ॥ किमिदं धवरेनाम किं धवाव ज्यलानां धालसा जी
वनवहलपनालं वृक्षचर्यं मधुगुलि मधुचलपला श्रीनावाचि इयं जिघृक्षुः मयली हनीं श्रीसर्वं
क्षायं हसर्वं क्षायं जिघृक्षुः मयली हनीं किमिदं नै जीवनवहलपनालं लपूगं जिघृक्षुः न कायं

१३

यहन

वगुलिवसुधं श्रीदिनं त्वं वाव कायकाव इयं मयली किमिदं धमश्लो ॥ हं गुच्छं हनीं ध्यावनं
महाले वाद्यधयं त्वाकलानं कृयं न साकनं सलपनयाय पथं गीधनं निया नानावसुवसु पागवनी
बले असकनं निया जिघृक्षुः मयली किमिदं वसमश्लो. श्रीमहादेवकमिदं पदं विष्णुन हं गुच्छं जिघृक्षुः ॥ ॥ अह
मिह नामायाव जीव जीव उवधं यनं महाधयनीं नृक्षलगाऊनीं जागवपु प्रकिग्रहं वेवमली श्रीमहादेव
कमिदं पदं समादद ॥ ॥ किमिदं धवरेनाम किं धवाव ज्यलानां धालसा किमिदं जीवनवहलपनालं

प्रवक्ष्यामि

ॐ
ॐ

हृदीं दालखाणा पल्ले किं आदिं गाऊ व आसन स चानि जियनी मयला ह नै ग थ गी धा लसा निहाल विन काव
नयं जिमिसं मनला ली व हा आदिं प्रतियु रु काय थ धि दु व रु क न नित्यं जियनी मयला ॥ च सम रु ल
जियनी सु प्राम स व क भिक्षा पद विद्वान् ह गु वा ह ना थ दू ल पा ल्प्य न ॥ ॥ वि च यि ॥ ॥ अ न ना ह द व
मनी ग र्ग वा मा यी स म र्ग ना भिक्षा अ न भिक्षा अ न वि धि म नू क र्ग मि ॥ थ थ ड जियनी स थ व र्ग ना म
हि थ ड व जि ना अ ग न थ आ र्थी ह नू व द क या भिक्षा जिमिसन द्वि थ र्ग म न द्वि थ वि धन या

१४

ग्रह न

य द्वि थ ध व ल प रु ला जियनी सना थ न भिष्य य नि स न पा रु वी व ल रु न क ॥ ॥ व दू ध र्ग म र्ग स र्ग म
लु ल वि स र्ग न या च क ॥ ॥ ह नै म रु ल थि ल क ॥ स्नान क रु ल वा य क उ व ण १ व स दी च क न य क र व व ण
लि थ का र्ग दा थ ज अ ल र्ग कि स्नान क र्ग गु व उ पा ध्वा हा र्ग स र्ग या क स्नान क र्ग ल ग न क ॥ अ र्ध व
॥ ॥ र व क न ॥ ॥ स म च्चा ह न आ चार्य म ह मि ल्क ना मा आ चार्य इ ध्वा य मि ०० दी वी व ल स र्ग
वि स्वा ॥ स र्ग स प नि ता ग य वा ज क ल ग म ना य ग्राम न ग च नि ग म प ल्नी प रु न ग म ना य ०० दी

उवधा

७१
६

पार्श्वजपिलांजन परिहाराय अधिनिष्ठु ॥ ॥ प्रकसनप्रकविरुया हाव, लादि आचार्य गुचसक
जिमिसथवरनाम किथ डन गुचयाक अध्वषया हा अमासंघया विस्वास गुली चीवल सेंघ
विमालगुली सेंघलांजनया यन ॥ हन अमा चीवल लाक कल स अने यात, यमन गच निगम पर्वन
परुन था यम, वने यात अमा चीवल विरुने, जियनीस अधिष्ठानया हाव, हन अमा सिजल गुचया
जपियाथल लांजन प्रकवपेयार्ज अधिष्ठानया हन, हगुना हनाथ ॥ ॥ तथा समन्वाहच आचार्य अ

१३

ग्रहन

हमित्नामा आचार्य अध्वषयामि, ॐ मीषिष्या ला ऊर्न कृषिकी, ॐ मीरिवरिविका मधिनिष्ठु ॥
थर्थ प्रकसनया हाव, लादि आचार्य क, जियनिसन थवरनाम किथ हाव, आचार्य सक अध्वष
यास्य ला हा, कृला हा धालसा, अमा भिकया थल, कृधाल आदिने अमा रिवरिवीका अधिष्ठानया
हाव, जियनीस विस्वविष्ठा हन थक गुचयाक प्रार्थनायाचक ॥ निचपि शिष्यसधायक उपाध्या
हायाक ॥ ॥ समन्वाहवमूपाध्याय, अहमित्नामा उपाध्याय, ॐ देवीवली सेंघस्य विस्वास, सेंघ

उपधा

ॐ
ॐ

स्वपवितागमय, कथापाध्याय श्रद्धावयामि ॐ देवी वली वाङ्मूलगमनाय, कथेवापाध्याय ॐ देवी
वली ग्रामनगवनिगमय, पत्नीपरुनगमनाय, अधिनिष्ठु ॥ एकमनप्रकविरुन उपाध्याय सकुतिमि
सथेवनामद्विधेवाव उपाध्याय श्याक, श्रद्धावयामि ॐ देवी वली स्वमागनाय, संध्याविष्टमसया
ईकयागुली, संध्याकनयायन, हर्ष उपाध्याय श्रद्धावयामि ॐ देवी वली वाङ्मूलसवनयाग
थ, धेनिष्ठु यने श्रीमाचीमल, जिपनी, ग्रामनगवनादीन पर्वनपरुनथय उनेयान अधिष्ठानया

१३

यहन

हावविष्टविष्टादूना ॥ कथसमन्वाहवमूपाध्याय श्रद्धावयामि ॐ देवी पा
ईकयागुली, संध्याकनयायन, हर्ष उपाध्याय श्रद्धावयामि ॐ देवी वली वाङ्मूलसवनयाग
थ, धेनिष्ठु यने श्रीमाचीमल, जिपनी, ग्रामनगवनादीन पर्वनपरुनथय उनेयान अधिष्ठानया
हावविष्टविष्टादूना ॥ कथसमन्वाहवमूपाध्याय श्रद्धावयामि ॐ देवी पा
ईकयागुली, संध्याकनयायन, हर्ष उपाध्याय श्रद्धावयामि ॐ देवी वली वाङ्मूलसवनयाग
थ, धेनिष्ठु यने श्रीमाचीमल, जिपनी, ग्रामनगवनादीन पर्वनपरुनथय उनेयान अधिष्ठानया

उवका

ॐ
ॐ

स्यै सैधव ॐ देविकला ऊनादिखिक्वीका मधितिष्ठतु ॥ थथै प्रकमन प्रकविरुयाई आर्यसैधव
सकचकै अखयसायाडा अमाभिकयाला ऊन थल आदिन खिक्वीका कथि अधिष्ठानया दूधक
हर्च अमा भिजल पाहु आदीन खिक्वीका कूधो वधुन आदिन अधिष्ठानया डाव किमिस्तु प्र
सन्नरुस्यविआय मालधक सैधरुपनी स्फुटाडा ॥ ॥ थनचीमल भिजल पाहु कूधो व खिक्वीका
वचिगा आदिन समस्त लव क्लाय गुचूर्य वरिखलीखन हास्य अधिष्ठानयाय मनु ॥ ॐ नमः समन

११

ग्रहन

ब्रह्मानी सर्वमथागगाधिष्ठितान्मचीवर्नखाहा ॥ ॥ चीमललव क्लया ॥ गथासमन्वाहव रुदन् अहमिह
नामा ॐ देवीमलसैधस्यविष्वाध सैधस्यपत्रितागमय धावयामि ॥ थथै प्रकविरुनलाकि गुचूर्यप्रमृष
न सैधदकास्फु किमिस्तुन थवश्नामकिथडा अमाचीमलसैधयाविष्वास सैधयापत्रिमानगुली किप
नीस्यन क्लयालपनि स दयावक्तन धवलपङ्कला ॥ ॥ गथासमन्वाहव रुदन् अहमिह नामा ॐ दे
वीमल वाजकल गमधाय ग्रामनगवप लीपहुन गमसाय धावयामि ॥ ॥ थथै निधयर्न प्रकमन

उवमा

ॐ
ॐ

एकविरुयाहर्न लादिगुचूपमूरवन किमिसधवश्नामद्विध द्वाव श्रमाचीमल वाऊकूल अनयागहन्य
ग्रामनगननिगमपत्रीपरुन कथनं अनयागधवलपशुला ॥ ॥ कथमसमन्वाहर्न रुदन श्रुमिर्दना
मा ॐ मां पातुं त्रिपिताऊन सिद्धताऊन लाऊन पवित्रो गाय ॐ मां सिद्धताऊन कृष्णिफा ॐ मां
खिस्केवीकाधनयामि ॥ ॥ धर्मा निश्चयनं एकमन एकविरुयाहर्न लादिगुचूपमूरवन किमिसः
धवश्नामद्विध द्वाव श्रमाणि जल गुचूपारु त्रिपिताऊन लाऊन पुं कृचपयान हर्न सिद्धयाथलः

१८

ग्रहन

क्रीधन आदि खिस्केवीकाधनं किमिसन धवलपशुला ॥ ॥ कथमसमन्वाहर्न रुदन श्रुमिर्दना
नामा आर्यात्मा सन्धनमायत्तया ॥ धर्मा सत्यं एकमन एकविरुयाहर्न लादिगुचूपमूरवन किमिसध
वश्नामद्विध द्वाव आर्य संधया धर्म दद्व किमिसन लायधना कूलपोलपनी गुचुया प्रसादी ॥
साधसन्धन सूर्य संधि विधा ॥ साधसन्धन वृद्धि सूर्य विधि धिक्क वकि पनी सन लायधना लिंगुली सन्धिल इला
समन्वाहर्न रुदन श्रुमिर्दनामा यदा संधि स सामग्री लप्य ॥ ॥ एकमन एकविरुयाहर्न गुचुपमूरव

उवका

ॐ
ॐ

नसीध सकलस्के जिमिसंभवनामक्षिपहाव गथसीधयांमवजानरुत्त मवजानरुका गुवृप्रमृषते
उपाध्या हांरुयादिं कृतपालपनी प्रसादया केन जिमिं गुली धुयनीलागा ॥ नदासामधुसोधाई
पार्थकविध शीलस्केधस्यपविपूरयता ॥ समाधित्केधस्यप्रसुस्केधस्य विमृक्षितनदर्शनस्केधस्यपविपू
यता ॥ ॥ थथसीधयामवजानरुका धधर्मकायधना ज्ञाउजिमीस शीलस्केधयापविपूरुइला ॥
हर्चसेमाधित्केधया प्रसुस्केधया विमृक्षितनदर्शनस्केधया धनकृतपालपनी प्रसादन भिन्नया मा

१०

ग्रहन

कमनीचयी हर्चमाकृष्टनभवीनयी जिमीसपविपूरुइला ज्ञाउ ॥ ॥ हगुवाहनाथ हथविनरूपति
जिपनीस थगुलीउन्नकायाया धर्मीरुनलायधना ॥ ० ॥ धनमहुतविसर्जनयाचक ॥ ॥ धनसफदल
पद्मवायाव सफदलपद्मसहायक काथपालकामन धुवकाव कंधाचस इइथहाव इइधालथ
सं कृष्टनकायकाव चवुंवीज वायथस्य काचपालसंदुनक्षय देवप्रणामयाचक थवरथासम
नया ॥ वडावनकूचक ॥ ॥ धनगहिदूजायाचक ॥ धनवन्दकृतायनि आजग्नानिवद्ध निवाउरुन

ऊ जमाने शिष्या शिवासन ९

प्रवक्ता

५०

वज्रमालया मकरुनगाय यरुमालमाविहीदाया॥ मनु॥ उ० आजाग्नस्वाहा॥ सत्रायान आपसक स
कलगीतिवाञ्छन वज्रमाला मकरुन सत्रायान धनन रिवस्त्रिचीका कथिसंथीयचक मकरुनलय
थनम्राडुमिविय थनदेवावलिविय॥ ॥ थनथकाडीनमधुल थलक सकलस्यनेत्वा नमाने पूरुषीया
या॥ पा० समाफयाय श्रीवीवदिविय॥ सलगनरथदक्षमपूजा श्रीधीषा कलधामरिषक धीषादूनि
याय वलिफलधै विसर्जुन मधुलपागा कलधालवज्ञाय॥ नागधै पूजमालाविस्मयकयकलधूया॥ थ

नापंक्रुयेर

२०

ग्रहन

नदधवलिकु यालि थनकाव देवाजाग्रवन दसलसासी इकाय धलिसलगनविय पालनायान कल
धुयरुला॥ ० ॥ ०० निप्रवद्याग्रहनविधिस्समाफ॥ ००॥ लिखितं धीखापूजमहानगवपप्रमा
त्यगिनिधर्मधामुर्महाविहा नाधिषा॥ श्रीवजाचार्य दालामहिनैकमास लिखापिना॥ हनुकवील
या॥ करिद्रुधनसियाकायपनिधीमूलयावजाचार्यचिन्मूनिनवदे दूययान धसरुली दाल
मूर्निचावक दूयका॥ धसरुधीचिन्मसियासन्ननदि१ यान सनानेत्वा रुयायमइरुला॥ ॥ नमपा

प्रवक्ष्या

याये २

५
५

तमम्वना ॥ ३ ॥ गालागुं कृया १३ गुचदिन थी कालामसि नदी पूरुकी हर्षललिखितवाङ्मया सुकृत
॥ ७३ ॥ ० ॥ धनलीपकृषनवीमलकोनायविधिबुध्या ॥ ॥ नकसी ७ वायुगुचमलुलसिकृतया ॥
लीखकलिष्ठयसिसमाधिकलभाधिवामनदेवपूजा दूखापिरवापूजा ॥ धनलिदूकृयापनी
तमासीहयावगुचमलुलदनका ॥ ॥ धनगुचधलपाइकिप्रार्थनायाय ० ॥ धनमिधनध
यका ॥ हगुनाहनाथजिसिसनधवजीवनवहलपनाली आमलाचकमिद्राधनलधमरुया ॥ ह

२१

ग्रहन

नैउपाधकमिद्राजियनीसुविदूतधकी ॥ ॥ धनश्राचार्यसधया ॥ ॥ यनर्यप्रवक्ष्यासम्यक्वृद्धवाहि
न कल्यकल्यसदापनीचकनदवना सर्वद्विष्टग्निकुलवायवः ॥ याऊनावा मनुष्यावा ॥ रुवसीमाचस
धडडाधपनीसन रुलारुनेसा ग्यलनाधलसा कृवयावृद्धपनीसन अलिपूगु महामोजल्योनिः
आदि रिद्रु रिद्रुधविजयनिसन कल्यकल्यानच धलानी आमलेकमिद्राधनलपावयान हर्चध
मर्यमलुलपृथिवीस सयस्वकोटिदवपनीस वसलपीवाइ अग्निदेवना कुलदेवना वायुदेवना ध

प्रवक्ष्या

धृति

पत्नीसंस्थितियाहावधनलपावविष्ठाक धलानीकपनी धाम लोकमिहाधचलयमात्ता ॥ यावत्स
वृत्तिनादेवा यावत्तीगमहीनता चतुर्कगगनायावत् यावत्कीर्वत्तमववा ॥ रुवधसंसाचसस
मन्त्रयवत्तमथीरुगवानसमाधियाहावविष्ठाक देवलोकेसमासधुल्लइयावविष्ठाक ॥ हर्नैग्वलमा
धालेसाधपृथिवीसंभोगनसमूहसंधचलपावचान चतुस्र्य आकाश नगानिगावा आदिगुन
०० त्यादिस्थितियाहावविष्ठा क ॥ धलानीकपनीसन धवत्तजीवनवहलयमालं धधामलचक

22

ग्रहन

मिहाधचलयमात्ता ॥ आवद्धमिसन मरुगहाव धउपासकवर्थाधचलयमात्ताहमिहा ॥ पा
लात्रहन्त्यान नपिवक्त्रनमृथं मृखानवाक्यं नहचपचत्वं पनरायो मनसापिपेक्षुन ॥ स्वर्गयदि
गच्छुन गृहवेन्नलप्या ॥ हभिषयनिहुहाहर्नैद्धमिसन पालिऊनसायंमनव निधयने हभिषाह
नैधत्रादिकाय जववकुक्लपृगाजिवजलीधं मालकिन अमर्त्यखेलाय धुपवाप्रीलाय धंमनव
पवसु ग्रहनयाय मवया कलाक सवलपावइयधं नाठनिन धनद्धमिसन मनविहूनलात्तप

पुवक्षा

ध
रु

स्वधमनव, धर्मलानाठकं रुक्मा, गन्धधालसा, धवचुया स्वाहान जायाव, योगावन, अर्थं दूयनीस्वर्ग
वनिवा॥ निधयनं दूयनीमन, धगुली उपाधक वरुधचलप॥ ७३॥ धनवीमलका नायाव गुत्र
धनपाया नविय॥ ॥ धिष्याधिवासन निवा ऊन, वरुगाठवा मन रुक्माय कलधालिषक विय॥ २३
वस्तुवगालि आदि, वसनलवज्ञाय मरुधलतय॥ ॥ धनधं काठिनमस्तुलथीलकं सकलमनं स्वानक
नदकसापूजा श्रीगीर्वाद धलीस गानविये॥ वलिविसर्जन कलधार्चनमस्तुलपानार्चनलवज्ञाय॥ ध
सिधलविये॥

यहन

नकोमानी पूजा॥ समयाचक, गमसगदनविय गक्षचक्र पद्मराऊनकायक धनलि गालज्ञाय गीरका
ला०००॥ धूनडाव विनामलिकयक, धिराकरवनं, अष्टागकायक, कलकठाचक॥ धूमिगमवीर
धवलिविय उधरुगाठ माकसिद्धिदानजतथा॥ ॥ धनवीमलका नायविधि॥ ७३॥ उंनमश्नी
वरुसत्वाय॥ धनयक्षालिषक वियविधिमाहा॥ दूयीथा कलपक॥ पचधालि कलध, सगन॥
मकट पचगवपागु, मन, आदि, अरु बाहिक॥ धूमि॥ ॥ धनगवाय गुत्रमस्तुल, पचधालि

पञ्च
अवस्था

५
क

नासिद्धगय पञ्चविंशतिपूजायाय ॥ सैद्धिफदवपूजा माहनीसाधनः आदिकाय ॥ मधुलथल
स्नानगान ^{चोपूजा} विसर्जन ॥ ०००॥ य पूजालेखवलिच्छय ॥ समाधियाय कलस संगमन मकट मट आर्पण
जा ॥ विधिर्धंदव पूजायाय ॥ पीथादिपूजा ॥ ॥ धनमिष्यपनीलसास्यदयक स्वसिफसंतय गुचम
लुलदनक मगपूजा विसर्जन ॥ पञ्चगव विय मिष्याधिवासना ॥ निजाऊन वज्र ताठ वासट रुन
नाय ॥ वलमधुल वायक पूजायाचक गुचयाग दाहालय ॥ वाक्य ॥ ॐ वरुचत्रमयमित्यादि ॥ धन

२४

निधक
यहन

सेखस साइइ नाय अकल ल साहालस्वांगस्य गुचयागुनिस अर्थयायक ॥ ० ॥ ॐ क्रीं प्रवचसस्का
नाय सगगुचवचनापस्वनाय अर्थप्रमिच्छाहा ॥ पालिसपूजादकक्षार्द ॥ २ ॥ स्यदधनियाय गुचन
मिष्यायाग लेखनहास्य स्नानविय ॥ वाक्य ॥ ऊऊमानसाधय प्रनिअर्थसिन्न गवाहि ॥ लाभिर्नसि
द्विर्वनकसानिधक ॥ ॥ धनमिष्यपनीधव ॥ २ ॥ धाससंगय मधुलथलक स्नानहालुनवायक ॥
धनकिग्दुस्नानकास्य हाथजायलपीशनमिष्यपनि ॥ ॥ अर्थवस्तु ॥ ० ॥ वाधिवज्र वृद्धानीय

वैवाहि

थ
ह

आदरुमहामह । ममापि ज्ञानार्थय खवज्जादिददाहिमा ॥ हनुनहनाथ वाधिवज्जवद्वयनिरु
गथअविषकविल अर्थीअपनिरु चक्षाययात खवज्जआदिन गथविल अर्थीविष्णोविष्णोनी
॥ विष्णोवावना ॥ नगः चक्षुसा लिखिगएदल कमलापवि चक्षुस्य उपविष्टमिषी सपत्नी वज्जवद्व
यीविलोवा ॥ आकर्षलपायादि ॥ उं वज्जि कृम ऊं हूं उं वज्जपाग कीं उं वज्जसूट वं उं वज्जविम हाहा ॥
लाहागिनचक्षु ॥ पक्ष्मपचावपूजा ॥ ॥ अश्वयत्ना ॥ विज्ञाना मलिषकसु उगनगालय वज्जि ॥ गुहा

२३

पक ॥

कवायथादरु मथाददधमस्यदि ॥ ॥ हनुनहनाथ वद्वयनीसु गथअविषकविल अर्थीअपनीसु
विद्वन ॥ गुहाकवमथागनी संसा च उक्ता वयायन धअविषकविया उ अर्थी धअविषकअपनीसु
विष्णोविष्णोनी ॥ धनसाया कुन कलक्ष माशुस दिवकी मया ॥ ॥ लावना ॥ नसुधगर्भः प्रक्षाममायने
महावागनडवीरुय वं वाचक्षु वाचक्षु ननिवध वज्ज मात्यल निर्गीत्य नगः ड वं देवी पद्मसरवन प्र
वमिर्न विष्णो अटिमिगुन्य गान कर्च हूं वज्जजात द्विपुऊं सप्रक्षुक्षार्यः स्वरावसस्वचवृषी हान

पंचालि

ध
ज

सत्वातिनलीविश्व॥पूनर्जुजसखादिमर्लिहियपद्मानिहयगगक्षमापूर्यस्मिन्ने॥लाचनादिविधा
समष्टिं प्रधुजपटाकावकुकादिनगीननृत्यपूषीकीकमादिवृत्तिहिकनकिमलयवजिर्नवा
धिविह्यमृगपूरुधीनकलहोहोषिष्यपद्मानिधुनमर्लिहियमानंयानिनीगसगीयमानंमृगल
गीन॥॥मिथ्यननिपालाहागिसरुस्यमिरवासपीयक॥यमंगलसकलसत्त्व।इदिस्मिन्स्यसर्वोत्पक
स्यवलधर्मकलाधियस्यनिः।ससत्त्वजनकस्यमहासखस्यनमंगलरुवकुपनमालिधक॥

२३

धक॥

ॐनिकलठालिधक॥॥धनपात्रानपद्मराजनमागुसदीचकीनयक॥लावना॥ननष्टंउष्टं
कावाधिविर्नवजर्नजागाश्रयस्वहृदीजनधमीनिर्नज्ञानसत्त्वकी।इर्नदृष्टासंपूष॥॥मागु
इनयागुसखाहधुखअलाहागनस्वपालवियमिथ्यनलाहागसरुस्यमान॥॥उमहासखवज
सत्वालिधक॥त्वामर्लिहियामिसर्वतथागगाधियतित्वनदुडोरुवा॥ॐनिपात्रालिधक॥॥गुच
नसखलखनवलंगनहलहाया॥॥अलिधकमहावजुधधनुकीनमत्कुनी॥ददामिसर्ववृक्षानी

पंचादि

ध
७३

प्रिगुष्मालयसंरुर्व ॥ ॥ उं आ ४ वजादफारिषि ३ हं स न ग ह्व म हं ॥ ॥ ध अ रि ष क व उ व उ थं स्व
र्ग म र्ग पा गाल नं न म स्का च या हा व न या ध अ रि ष क स्व ता लं द न उ त्पा रि रु या व वा ठ ग थ वा धि
व र्ज ग थ ग न या ग विल अ थि कि मि नी न द्वा या च क या न वि दू न ॥ ह गु च ह ना थ ॥ पं वा य वा च पू
जा ॥ ॥ ० ॥ नि उ द का रि ष क ॥ ० ॥ अ व व ॥ वा धि व उ क्ष व ह्वा नी य थ द रु म हा म ह ॥ म मा पि ग्रा
स ना थ य स्व व जा दि द दा हि म ॥ ॥ वा धि व उ क्ष व ह्वा ना ग थ विल कि प नी न द्वा या च क या न थ

२१

६६॥

थै स्व व उ आ दि वि या थं कि प नी लं म कू टा रि ष क वि दू न ह गु च ॥ ला व ना ॥ मि ष मा च ल स र्ग र्ग पं च
स्ना न स त्व ने की र्ण न र ४ स्तु थ ग न वा धि रि ४ क र्ण न रि षि च मा न चू प व उ दि रि चू प नी य मा नी म ग
ल गी र्ण ला व य न ॥ ध न म कू ट न पू य क ॥ ० ॥ द न स र्व व ह्वा नी प्रे धा नु क न म स्क र्ण ॥ य धा र्क पू ज
ना थ य म कू ट पं च क लो रु वी ॥ ॥ ध म कू ट स म स्क र्ण थ ग न नी वि भु व न नी स र्ग म र्ग पा गाल नं
न म स्का च या डं न या गु ह मि षा कि स्त न पू जा या च क या न ध म कू ट न पू ल हा र्ण पं च क ल स र्ग

पंचालि

४
३

नरुजकल ॥ ॥ मकटदीनका ॥ उं वज्रधात्री ध्वनी अलिषि च हूं ॥ उं सत्ववजी अलिषि च हूं ॥ उं
नत्ववजी अलिषि च हूं ॥ उं धर्मवजी अलिषि च हूं ॥ उं कर्मवजी अलिषि च हूं ॥ उं सर्ववर्षे
उमसिमहासुनमकटपुनिच्छदा ॥ ॥ संखलंखनहाया ॥ उं आः वजनमकटालिषि च हूं ॥ उं सत्ववजी
अहंवजमुषादा ॥ ॥ सर्वरावा समारुत्वा ॥ उं फालावा ॥ उं नलि न ॥ अहंवजनमसि हूं ॥ नाहुं दा
ननामधन ॥ ॥ अमामकटदीनगधी ॥ उं धालसा ॥ समस्ततावस ॥ समवाह ॥ उं गुलीरावनभूद

२८

धका

वसवाह ॥ अहंवजनननउ ॥ अलिषि च हूं ॥ वज्रवर्कमपू ॥ अविनाशमपू ॥ ॥ उं किमकटालिषि च हूं ॥
अध्वयत्ना ॥ ॥ वाधिवज्रवद्वाना ॥ यथादहमहामह ॥ ममापिनालनार्थय रववेकाशददाहिम
॥ ॥ वाधिवजनवद्वयातगस्थविलव ॥ अलिषि च हूं ॥ उं पनी ॥ उं दाया ॥ उं कया ॥ नखवजनादि विनाश
हृगुनाहनाधकिपनी ॥ उं वज्रलिषि च हूं ॥ विषाविषाहनी ॥ ॥ लावना ॥ नगस्तुभार्थिर्न ॥ व ॥ नमिषी
मदिनिहोका ॥ उं ॥ य ॥ य ॥ वि ॥ ले ॥ न ॥ अमिता ॥ ह ॥ नृ ॥ य ॥ ह ॥ न ॥ स ॥ त्वा ॥ लि ॥ ह ॥ ह ॥ त्वा ॥ व ॥ उं ॥ वा ॥ मि ॥ ना ॥ ता ॥ त्म ॥ क ॥ वि

पीवारि

थ
उ

विद्या॥ ॥ अरिषकं महावर्जं गुणं नमस्कृतं ॥ अरिषकं ह्यमसि वद्धेर्वज्रारिषकं नमः ॥ ॐ दं
न सर्ववेद्यानी गृह्यवजि सुसिद्धया ॥ ॥ धवजोऽरिषकं नवधट् स्वर्गमधिपागालोक्तं नमः
स्वाचया इत्युक्त्या गुली ध्वजोऽरिषकं विद्या न रूपनीतथा गगनरत्न ध्वजिगुवजोऽरिषकं ध्वजम
सर्ववृद्धतावश्यकया न का उ अमी जिह्वयनी सुलिगुसिद्धिया न ॥ ॥ सिष्यया नृगव उ क
ध्वजपालधियकं वज्रविद्या ॥ सर्ववर्तन न साया ॥ ॥ उं वजोऽरिषि च सचन ह्यमर्ह सर्वसंस्त

२०

धका॥

एकवर्तुः ४ आकावकूलसंरुवाः ॥ महाकवपदप्रापं न संस्तान च संस्तान ॥ ॥ समस्तसि यच्च गावर्तुन
ध्वजिगुवजोऽरिषकं इत्युक्त्या ॥ आकावकूलसंरुवाः इत्युक्त्या ॥ न उच्यते अकवपदलागा आवसियमजिव
उल्लिख्य लिखकं धाम इत्युक्त्या ॥ ॥ ॐ निवजोऽरिषकं ॥ ॥ अरिषकं ॥ वाधिवर्जं नववृद्धानी यथा दत्तमहा
महा नमोऽपि गुह्यना धर्मयखवजोऽद्य ददाहिम ॥ ॥ वाधिवर्जनवृद्धयनी सुगंधविलस्युष्ठाऽरिष
कं अर्थी जिह्वयनी सर्ववृद्धया च कया न खवजोऽरिषकं विद्या ध्वजिगुवजोऽरिषकं ॥ लाव

पेशलि

ले
०

ना॥मिष्यत्वं खकानज ख (भेत्यन्न, अमा घसिद्धिं विराव्य॥ ह्यनसत्त्वा रिन्न द्यष्टा अमा घसिद्धिं वि
रावयता॥ ॥०॥ खल्लेपनदाय॥ अलिषकं महावज्रमित्यादि॥ वज्राधिपनित्वा मलिषि अमि निष्ठे वज्र
समयत्वं हाः वज्र घट्ट अश्रु॥ गृहीता सिमया रुगवने मयि सन्निहिता रुवश॥ घट्टविय॥ ०॥ खल्ले
खनहाय॥ ०॥ वज्र घट्ट मलिषि अमि सने रुत्त्वमदी॥ ॥ अनेन त्रयधर्माषु सस्मात्तद्विगच्छन् नवृद्धिं न
च वृत्तत्वं न चेव नैव जीवकी॥ ॥ उत्पत्तिमइ अधर्मा सीयमजिव वृद्धिं मधु वृद्धिं स्वतावीमधु सत्त्व

३०

धक॥

मस्माकं मधु॥ ॥ निवृत्तं ननु न्यना कच॥ रिन्न ह्यनादयाधिपशधर्मादया वाधयन् धर्मादया गूचकी॥
निवृत्तनायायी आकाचकार्यं मज्जिव ह्यने उदयम रुववाजा धर्मात्थ उदयइव धर्मादया थु
न्य थधिगु अमा घट्ट सिउा रुमिष्यपनि॥ ॥ ०॥ निघट्ट मलिषक॥ थन चीनतीत्तकं॥ नामकूया॥ व
ज्रसत्त्वा मलिषि अमि वज्रनामा लिषकन॥ रुथी अमक वज्रनाम सत्त्वा गनत्वी रुधु वृत्तत्वा॥ ॥ ०॥ नि
नामा लिषकः॥ ॥ थन घट्ट समयवियक॥ प्रतमात्ता उदका पाशा मकट वज्र घट्ट नामा पशुलि

पञ्चालि

ले
५

काचन॥ ॥ हृषिष्यकूपनीस कलमालिषक पाण्डालिषक मकुटालिषक वज्रालिषक घण्टालिषक
नामालिषक ध्वजनाल्लिषक कलागो आवधालिषक लानडाव आवधूपनीसनधनवपिआह
मिषा॥ ॥ अलि अलिषक कक्रियाचर्या गुरुयार्गधवराव्याख्यान मनुसाधनधधिकुमारवनि॥ ॥
हृषिष्य आवधूमिसनक्रियायाय चर्यायाय गुरुसयागनायाय हनं ज्ञाय मनुसाधनतप
धनिरुमीस अधिकुमीदइलाधक गुननमिषयागकछाइला॥ ॥ धनमनुविया॥ ॥ गुननजा

३१

धक॥

पयासी॥ मिषयागविया॥ गुननधया॥ ॥ दहसिमयागवन्नस्मिन्नहिगारव॥ ॥ मिषन
गुनयाक मनुकाययागधया॥ ॥ गृहीतासिमयागवनामयिसन्निहिगारव॥ ॥ धनमिषान
जाययाया॥ ॥ नचत्वमिदी अदृष्टमलुलस्यपूवतानवकव्य मारुसमयावधनि॥ हृषिष्यकूपनीस
न ध्वरव पञ्चालिषक दहामलाकयनी हवनजायमनव ग्वजनधनदया आदि वियावडनिव
गधस्याधधक अथगधधक धूमिसनकनमइ कनलाकनसाथी ३ वजसर्त्तनाह्लादयकानयाइ

पंचाङ्गि

ल
दि

त्वध्वं व्यभनकय कावतयीव नानादृश्वरुयीव ह्युमिस्तु ॥ ॥ नवर्त्तु गुचुत्तावकृत्वा व्यामार्त्तविषना
 पविहावत्तकानकृत्तियीकृत्वा नवकं पटवत्तान ॥ ॥ ह्यिष्य ह्युमिस्तन हर्त्तु गुचुत्तध्यात्वा म
 यागसा प्रसन्नदिनकात्थं विषनदहचययकावे नवकस कृत्तिनिकावतयीव ह्युत्ता ॥ ध्युगुत्तिन
 ह्युमिस्तन गुचुत्तावत्तलता अग्रस्तयाग पवमथुचपनिर्म वद्वायाय ह्युत्ता ॥ ॥ धनस रुनल
 य ॥ चसपालवत्तनधिय ॥ ॥ धनसलुलधत्ता सकलसंनखानन ॥ द्युमावत्त श्रुतीवीद सग

32

यक॥

[illegible]

यह

ले
क

निकलधन्याया ॥ ० ॥ उैनमः श्रीवज्रसत्त्वाया ॥ वज्रसत्त्वाया ॥ ३ ॥ धनश्रुतान् अग्नि कलुलस अधिष्ठा
नयाया ॥ धनकृपायायना ॥ वाक् ॥ ननु मम हा कृपा दिव्या प्रविष्टा बुद्ध देवता वृद्ध धर्म सद्य देवता ॥
पृथ्वी जगदला गतीः सर्व विद्युत् भास्वि चक्षुः कर्तु स्वस्ति स्वाहा ॥ धनहामसि पूजायाऽऽपयाऽऽ
हामसि नत ॥ भैरव लीखन हास्यं हामसि स पूजा ॥ धनसलि मलास सि न वि कु वा कृ धठ नस्य मनया
वक च हाम पूजायाया ॥ हा विले च वि कु वा कृ धठ कास्य दाय वी हि इया ॥ अर्थ ली सि क पा न या च क

३४

विधान

॥ स्वस्ति वाक् न अग्नि स्तुप न याया ॥ वच च नु धर्म ॥ अग्नि दीप दी व्या विषा विषम हा ग्रय हव्य कव्य
वाहनाय दानपत्र मम श्री वज्र सत्त्वा बोधनार्थ यस्तु वक्तु नाय अमक निमित्तार्थ अग्नि स्तुप न
कल कल स्थाह ॥ ३ ॥ हामलावना ॥ ननु कलि नाग्नि मध्ये पका चर्त पद्म मा चर्य हा न इय वि च जा ना
ग्नि मस्तुले च का चो हवी पीत वल्गु मक मूर्ख ॥ चतुर्भुज वाम दक्षु क मस्तुल ध्वं सव्य वच दा कृ माला
ध्वं ॥ पीता वचार चर्त यस्तु पाविनिर्त प्रित्तु जटान कृ ट्वा विर्त ॥ वज्र सत्त्वा लं कृ न भोलिर्त सम

यह

ल
ह

याग्निविष्णवा॥ अहं हिमं साहं नदं वर्षिं द्विजं सहस्रं मृही त्वा इति महावर्ष्मि सन्निहिता वस्त्राहा॥
ॐ अ॥ १८८ कि० ४८० २८ कि० ४८० हा॥ १८८ कि० ना० म० डा॥ ॐ व० जी० क० म० डा॥ ॐ व० जी० पा० म० डा॥ ॐ व० जी० ट० व०
ॐ व० जी० व० म० डा॥ व० जी० क० म० डा॥ नि० ना० ॐ ना॥ ॥ अ० न० य० दी० पी० दी० व्या० विष्णो विष्णो महाग्रयं रुच्यं कथं वाहा
नाय दृष्टं ४८० वं हा॥ ४८० म० म० य० स्त्री व० उ० म० ॐ अ० ४८० म० म० याग्निविष्णवा॥ ॐ स्व० लु० ना० हं हं प्रा० दू० म० नी० प्र० नि० दू० स्वा
हा॥ यह० म० गी० र० व० ली० र० वी० हा० या॥ अ० न० य० प्र० व० न० स० का० ना० य० पा० यी० प्र० नि० दू० स्वा० हा॥ अ० न० य० दी० पी० दी० व्या० विष्णो वि

३३

विधान

वमहाग्रयप्रवचसत्का नाय अर्घ्याचमनी प्रनिष्ठ स्वाहा॥ स्नानयाय कलशं लीखन यहं सहाया॥ धी० २० ला० २०
धी० २० सु० २० न० ॥ ॐ व० उ० स० त्व० आ० ॥ ॥ ध० म० कु० म० ध० ल० का० च० क० ॥ ध० न० ध० का० लि० न० ध० व० जी० न० क० ध० ल० का० च० क० ॥
ऊ० प० या० ह० न० च० ना० न० वा० ला० ॥ आ० कि० नि० डा० व० ध० ल० स० का० सा० च० क० म० कु० ध० ॥ ॐ सर्व० पा० प० द० ह० न० व० जा० य० म० वी० पा० प० द० ह०
स्वा० हा॥ स्व० स्व० म० कु० म० धि० वि० धि० वा० हि० अ० धि० धा० न० या० या॥ ॥ ॐ धी० स्वा० हा॥ धृ० ग० धा० ध० न॥ ॐ ॐ स्वा० हा॥ इ० य० धा०
ध० न॥ ॐ जी० स्वा० हा॥ वी० हि० धा० ध० न॥ ॐ क० नू० क० नू० स्वा० हा॥ अ० ना० दि० धा० ध० न॥ ॐ अ० स्वा० हा॥ स० मि० दू० धा० ध० न॥ ॐ

यह

ल

ज

पयक॥ ॥ कताग्निस्वर्चका ब्रह्म शुक्लवज्र यव रुत प्रमाने विहावा॥ ॐ आचमने प्रणिह स्वाहा॥ धरि
लेष न हाय॥ ॐ अग्नय स्वाहा॥ धलदाय॥ शुक्रापरिफे उरया र्णा समिष्टा परि पाद्यादि ईद्रया म॥ ॥ धि
विधिदाका धलसवाला वदाय॥ ॥ ॐ अर्क्षय स्वाहा॥ अर्क्षसि॥ ॐ वज्रसामाय स्वाहा॥ पलासि॥ ॐ व
जीमवाय स्वाहा॥ खदिल॥ ॐ वज्रवृक्षाय स्वाहा॥ अयो मार्गी॥ ॐ वज्रवृक्षाय स्वाहा॥ वक्षसि॥ ॐ वज्रय
स्वाहा॥ इन्धनसि॥ ॐ वज्रधनिश्चराय स्वाहा॥ समीकृ॥ ॐ वाधिरुक्षाय स्वाहा॥ वर्तनग॥ ॐ वज्र

३३

विधान

वनाय स्वाहा॥ पिनाषा॥ ॐ वज्रवीजाय स्वाहा॥ वज्रग॥ ॐ मधून स्वाहा॥ मधूनसि॥ ॐ अरुकाय स्वाहा॥ अ
रुकायसि॥ ॐ सर्वपापप्रक्षमनाय स्वाहा॥ वकीका॥ ॐ वज्रसहकाय स्वाहा॥ अमृतसि॥ ॐ सर्वकृष्णप्रक्ष
मनाय स्वाहा॥ कदम्बवर्गीकावि॥ ॥ ॐ अप्रतिह नवजाय स्वाहा॥ कृष्ण॥ ॐ वज्रयूष स्वाहा॥ इवीकृष्ण॥
ॐ सर्वपापदहनवजाय सर्वपापदह स्वाहा॥ हामला॥ ॐ वज्रपूषा स्वाहा॥ अकृष्ण॥ ॐ वज्रवर्णाय स्वाहा॥
कृष्ण॥ ॐ वज्रसंवाय स्वाहा॥ माध्या॥ ॐ वज्रविजाय स्वाहा॥ स्वानवा॥ ॐ वज्रनम्भिविजाय स्वाहा॥ वा॥

यह

ल

उ

ॐ वज्रमहावलाय स्वाहा ॥ स्वाहा ॥ ॐ वज्रनीलमाषाय स्वाहा ॥ मासा ॥ ॐ वज्रकंकवाय स्वाहा ॥ कयगु ॥ ॐ वज्र
कूलथी स्वाहा ॥ कालना ॥ ॐ वज्रमृग स्वाहा ॥ मृका ॥ ॐ वज्रवादकी स्वाहा ॥ पुनि ॥ ॐ सर्वाथी सिद्ध स्वाहा ॥ श्री क
प्रका ॥ ॐ वज्रलाजाय स्वाहा ॥ नाय ॥ ॐ सर्वसंप्रदाय स्वाहा ॥ अजाधवीका ॥ ॐ अश्वजदर्शन रुलाय स्वा
हा ॥ धीकालसिद्धादिपं व्रीहिदक्षिदाया ॥ ॥ अश्वीतिनत्वन हातव्य ॥ पंला ॥ दी ॥ सु ॥ गो ॥ सुला
पाकसे ॥ रवलेख साइदु नस्य ॥ साचाक दूयक ॥ अग्नि कृषु सदाय मकुथा ॥ ॐ वज्रसत्त्व आशा ॥ ३ ॥

३१

विधान

पंचापवाज पूजा
लाभ्य

थनसुलापाकसद्यलनस्य स्वस्तिवाकन अग्नाहूति याया ॥ ॐ अग्नय दीप दीव्या विषा विषमहा प्रय ह
वकव्य वाहनाय दानपठ अमकस्य अमकनिमित्तुर्थ अग्न्याहूति प्रदय २ प्रनिकृ स्वाहा ॥ ॥ दृष्टा वाद
ना ॥ सुनि ॥ नैथनचसुविशुद्ध सर्वसिद्धिमहा काली ॥ वेधनचमदीवद सर्वसिद्धिप्रदायक ॥ मंनुमर्षधा
थनहामस कलधलीधनदाया ॥ ॥ ॐ स्वस्तुवाह प्रोक्तमर्तकृत्वा ॥ नगोवक्ष जाचसनादिकं कृत्वा लोकोरु
नहानाग्निविहाया ॥ कालो कालाग्नेय द्वाग्ने हृदिकमल वन्द्य सनापवि ॥ मस्तुलाधिपति ॥ स्वस्त्ववीज

यह

ल

उ

निधन विद्वत्पुत्रपुत्रिणमन महुलाधिपतिः समस्तुल्यं विहाय ॥ स्वद्वीजमयवीरानीक भो ह्यनसत्त्व
वज्रं कृष्णदिलिना नीय पुनर्मादृष्टा स्नानसत्त्व समयसत्त्वया दीवनीचमीव समवसिह गोत्रिताया ॥ ०
धनज्जगत्सुतासाधपिनी ॥ एका ॥ धनलीदेवपुजा ॥ धूप निजाऊन ॥ कर्णलेखने स्नाने याया ॥ यन्मिग
लमिति ॥ यथा हि ॥ शक्तिकनकन ॥ प्रनिविस्त ॥ धनमहुल ॥ धनसिद्धि ऊऊम ॥ स्नाने ॥ अइवाचने ॥ वे
द्य निमत्ता ॥ समयधाला ॥ मन्पुष्पे न्यास ॥ परिलो ॥ धी ॥ सु ॥ न ॥ मालासाहनी साधना ॥ ॥ देवगायाः

३८

विधान

मखर्चकायल शुक्रवजयवरुलप्रमार्गविहाय ॥ ॥ ॐ अश्चमनीप्रनिष्ठुत्वा हा ॥ एववत्यचिपाशादिम
नमकुलशुभ्याना ॥ ७ ॥ धन ॥ धन ॥ सिन्धुविहीहि ॥ समस्तं हवया धी ॥ देवयामूलमकुलदाया ॥ ॥ पर
लो ॥ धी ॥ सु ॥ न ॥ ॥ स्वसिवाकनदेवगाकनियाय ॥ अग्नयदीपमित्यादि ॥ देवगाकनित्प्रनिष्ठुत्वा हा ॥ सुला
पाकनदेवधियक ॥ जाय ये धर्म्म ॥ मूकालमखत्यादि ॥ वलिविया ॥ देहलक एचनयक ॥ ० ॥ धनज्ज
कनियाय ॥ भिलीधिहीहि ॥ समस्तं मकुलदाया ॥ धनकावसुलापाकसधलनया स्वसिवाकपठपी ॥ अग्न

यह

ले
उ

यदीपैरसैर्यादूर्गिपनिपूजयहूँ॥ परलाघैरुगाँ ॥ धनआगमइलसा, मीसादूर्गियायक॥ प
केमलिपूजादिगवली, रुववलीविय॥ परलाघैरुगाँ॥ सिद्धमाहनीचुय, मालकाय, गीत, कालायी
ले, से, मा, नृग्यउवाक १०८ नास्यै, स्वाऊनवालाव, आदूर्गिविय॥ पथधवाहायक, मालसा, धूमली॥ इ
हायस्वादाव, मिनादूर्गिविय, पूरुईदाया॥ ॥ धनमालसापुटापकयधनकावदेवावलिविय॥ ध
नमिष्याधिवासन, कृष्णनऊऊमानिपनीनय, पथसुकाकनक, नाय, अदूर्गविस्य, स्वानक, रुलक

इ

विधान

चक्र॥ गगनमिष्यमात्मानैलावयन॥ स्वराव शुष्ठा सर्वधर्मा, स्वराव शुष्ठा इह। पुन्यगा, नवउ, स्वरावा
त्मकाइह॥ नीचाऊन॥ वजनगायो॥ उँवउवदहूँ॥ गाठवा॥ उँवाहावदहूँ॥ मगई॥ उँवउविद्यानकि
ऊहूँ॥ उँयाऊनादूर्गियहूँवाहा॥ धमकुत, मिनीपित्रीहिदाया॥ ॥ धनशुवापागस, धलतस्यै, स्वकि
वाकन, अग्नयदीपैदीयादि॥ मिष्यादूर्गिपूजय॥ उँपनिऊवाहा॥ मलापागअनियोवक, मई, ल
य, यधर्मियादय॥ वसपोलसवऊनधिय॥ उँसुपनिपिठवऊवाहा॥ ७॥ धनमशुल, थलकास

यह

फ
०

कलमनस्वाननानागमइलसास्वाननानमनउनि॥पुष्पकलनवजनथिसंजयधन।यायसकलंज
नियोवकंऊऊमानपनीइकी॥थनयइसंवीरवलीरवकुलनय॥ॐआश्वमनीपनिहस्ताहा॥॥थन
पुष्पइदाय॥॥नकुसमाधुलर्यनीस्वाहा॥जंवीनाॐगगलीगगलीविलाकिनहंरुनकाजाजस्यपुष्टिकुच
स्वाहा॥विल्वरुला॥ॐधर्मधर्मबाजदहंसर्वविघ्नप्रणानिकुचस्वाहा॥वसुगुली॥ॐवजप्रियतमस्वाहा
पुष्पसमानी॥ॐसुपुष्पसकववलकलनीयनकाबाजस्यनमकस्यपुष्टिकुचस्वाहा॥समक॥ॐवजनाग

४०

विधान

पुष्पकिलकीस्वाहा॥चपकंवाच॥ॐवजपद्मपुष्पकिलकीस्वाहा॥पद्मकसला॥ॐआश्वजधूपहंस्वाहा॥धनी॥
ॐआश्वजवाससंस्वाहा॥ऊऊमा॥ॐवजाबलीकिनकींस्वाहा॥खड्गमा॥ॐवजदीपकींस्वाहा॥माॐगा
॥ॐवजधामिदुलायस्वाहा॥हलश्रमलवेहल॥ॐवजकठलीलरुलायस्वाहा॥कचा॥ॐवजरुनका
नीयस्वाहा॥रुनमी॥ॐवजकींधीयस्वाहा॥कभुसकी॥ॐवजमूलायस्वाहा॥ॐननीदिमूलदका॥ॐ
वजॐदुस्वाहा॥नु॥ॐआश्वजएषकायस्वाहा॥यकंपकाना॥मधि॥ॐवजगोदिगरुलायस्वाहा॥

यहवि

* दागी

फ
५

ॐ वं उमा गुरुलाय स्वाहा ॥ बडासी ॥ ॐ सर्वप्रथम नारायण स्वाहा ॥ यक्षध्वनि ॥ ॐ श्रीः वज्रान्तु लाय स्वा
हा ॥ गव्यगाला ॥ पं-ला-घं-मु-न-॥ धनश्री वैकुण्ठलसा ॥ सलापानसद्यस्तनस्पृष्टीयाया ॥ धनश्री
गमइलसा ॥ रवाजछुसला, वनीमधि, पञ्चभक्ति आदि तस्य लीजन सेवा इधतयो वसलापानसतस
हामसहायक ॥ पाल ३ मनुष्य ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय स्वाहा ॥ धनपञ्चभक्ति आदि ग्रन्थ
मालसाको माची पूजा, महुल स्थल कल्यान नन मुक्ति काङ्क्षन ॥ धनसलापानसद्यस्तनस्पृष्टीया

89

५०७

वर्षं वसुधा यथा भक्तिद्वारा न संपूर्णं दुर्गियाय ॥ वाक् ॥ अग्नयदीर्घदीया विषाविषमहाध्रुय
हव्यकव्यवाहनाय दानपत्रं अमृकस्य अमृकदेवता हव्यकाय यस्तु आवाधननिमित्तं ॥ ३ ॥ यस्तु दाननित्यं ॥ पंचत्वा. र्घ्य
पूर्विकं च आयागं धत्ता मनार्थं यस्तु पूर्णं ॥ ३ ॥ यस्तु दाननित्यं ॥ पंचत्वा. र्घ्य
कुरु ॥ ॥ भगवद्भक्त्युत्पत्तिविमर्शने दक्षिणपूरजा सत्पत्तिनयकं कलनं भक्तिविक्रमं श्रीगीर्वाण ॥ धन
अग्निमयं वायव्यपूरजा लाभं घृण्णवादनं कृतिं मत्तुनर्पणी ॥ ॥ नमस्तुभ्यं मत्तुलाधिप

